विश्व में हिंदी की महत्ता

डॉ.एम.आंजनेयुलु
हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्व विद्यालय,हैदराबाद.
E-mail: m.anjhcu@gmail.com

विश्व में हिंदी की हैसियत पर कुछ चर्चा करने से पहले राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की हैसियत को परकना उपयागी होगा। भारत कई वर्ष अंग्रेजी राज के अधीन रहने के बावजूद भी हिंदी हिंदुस्तान की सबसे ज्यादा प्रचलित भाषा थी। किंतू इसे हिंदी भाषी प्रान्तों तक में आसानी से राज भाषा नहीं माना गया और उसे ऐसी मान्यता दिलाने के लिए आंदोलन करने पडे। इसके पीछे तत्कालीन राजनीति थी।

पर सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में सभी दूरदर्शी लोग जानते थे कि जनसाधारण तक अपनी बात पहुँचाने के लिए हमें बराबर हिंदी का सहारा लेना ही होगा। इसलिए पहले इसाई मिशनरियों ने धर्म प्रचार के लिए हिंदी को अपनाया तो स्वामि दयानन्द सरस्वती ने भी राष्ट्रीय एकता और धर्म प्रचार के लिए हिंदी को अपनाया। दरअसल हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिलाने के लिए महात्मा गाँधी से पहले प्रयास करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। एक बार जब उदयपूर रियासत के दिवान मोहनलाल विष्णुलाल पान्ड्या ने स्वामी दयान्–ंदसरस्वती से देश की एकता के आधार क्या हो सकते है? इस प्रश्न के उत्तर मे स्वामी जी कहते है जिस देश में एक भाषा, एक धर्म और एक वेश-भूषा को महत्व नही मिलेगा उसकी एकता बराबर लड़खडाती रहेगी। आप लोग रियासतों का अपना सारा कारोबार देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी में प्रारंभ कीजिए। फिर देखिए उसके कितने अच्छे परिणाम समाने आते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना भी हिंदी में ही की, उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने अपना समस्त कार्य और प्रचार हिंदी में ही किया। इस प्रकार से प्रचार कार्य से हिंदी देश के विभिन्न भागों में फैली, आर्य समाज द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थाओं में हिंदी को एक अनिवार्य विषय के रूप स्थान में दिया गाया ।

इस तरह के प्रयासों के फलस्वरूप राष्टीयआंदोलन में अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ और महात्मा गाँधी ने उसके प्रचार को राष्ट्रीय आंदोलन के एक अभिन्न हस्त के रूप में प्रयोग किया ।

१९१६ में राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ, उसमें पहली बार महात्मा गाँधी सम्मिलित हूए थे, उस अधिवेशन से पहले तक कांग्रेस का सारा कार्य और भाषण अंग्रेजी में हुआ करते थे, महात्मा गाँधी ने अपना भाषण हिंदी में दिया । इसे हिंदी का प्रचार करने वालों पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा ।

१९०९ में हिंदी साहित्य सम्मोलन प्रयाग की स्थापना हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हुई थी और सम्मेलन हिंदी परीक्षाओं का संचालन भी करता था । हिंदी के प्रति महात्मा गँधी के अक्त साहसिक कदम ने सम्मोलन के संचालकों को आकर्षित किया और उन लोंगों ने १९१८ में इंदौर में होनेवाले सम्मेलन के अधिवेशन के सभापति के रूप में महात्मा गाँधी को नियुक्त किया ।

इंदौर का अधिवेशन हिंदी के प्रचार कार्य से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, महात्मा गाँधी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दक्षिण भारत के तमील, तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड भाषीय प्रदेशों में हिंदी प्रचार की अवश्यकता पर जोर दिया ।

१९१८ में मद्रास के भारत सेवा संध के हिंदी प्रेमी युवकों ने महात्मा गाँधी को लिखा कि हम हिंदी सीखना चाहते हैं। अत: हमारे लिए एक हिंदी प्रचारक को भिजवाइए । महात्मा गाँधी ने अपने पुत्र देवदास गांधी को जो उस समय केवल १८ वर्ष के थे, शीद्र ही हिंदी प्रचार के लिए भेजा । १९२७ तक मद्रास में स्थित हिंदी साहित्य सम्मोलन प्रचार कार्यलय के नाम से हिंदी का प्रचार का काम किया जाता था । पुन: महात्मा गाँधी की सलहा से इस प्रचार कार्यलय का नाम दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास कर दिया गया । अत: १९२७ से सम्मेलन का प्रचार कार्यलय संवतंत्र रूप से एक नई संस्था बन गया ।

९ वर्ष के पश्चात् पुन: सम्मेलन ने मद्रास की तरह हिंदी प्रचार के लिए एक दूसरा केंत्र वर्धा में स्थापित किया । १९३६ में हिंदी साहित्य सम्मेलन का २५वां अधिवेशन नागपुर में डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में हुआ, इस अधिवेशन में महात्मा गाँधी की सलाह से हिंदी प्रचार समिति वर्धा का संगटन किया गया, जिसका उद्देश्य था कि अहिंदी भाषी प्रंतों को छोड़ कर जिन में हिंदी का प्रचार दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास कर रही थी, हिंदी, अहिंदी भाषा-क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार प्रसार करना निश्चित हुआ ।१९३८ में इसका नाम राष्ट्र भाषा प्रचार समिती वर्धा कर दिया गया । उसकी शाखाएं भारत के पूर्वी-पश्चिमी सभी अहिंदी भाषी प्रदेशों में हैं और यह संस्था अब भी हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का अंग है ।

राष्ट्र भाषा प्रचार समीति वर्धा के साथ सहयोग करने वाली

१६ ऐसे प्रदेश स्तर की राष्ट्र भाषा प्रचार समीतियां हैं । इन संस्थाओं की प्रेरणाओं से हिंदी प्रांतों में विशेष रूप से दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार ने तीव्र आंदोलन का रूप ले लिया ।

देश की आज़ादी केलिए संधर्ष करनेवाले सभी बुद्धिजीवियों के सामने यह समस्या थी कि संवतंत्रता प्राप्ति के बाद समूचे देश की राष्ट्र भाषा (राष्ट्रीय कार्य व्यवहार की भाषा कौन होगी इसका उत्तर था हिंदी) अत: हिंदी के प्रति समूचे देश में विशेष रूप से दक्षिण भारत में जो अकर्षण पैदा हुआ वह राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत था। हिंदी सीखना या सिखाना राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन था । फलस्वरूप उक्त संस्थाओं के कार्ये क्षेत्र अत्यंत विस्तत होते रहे और हिंदी प्रचार को और भी सुत्यवस्थित करने के लिए प्रदैश के स्तर पर अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं का भी जन्म हुआ । उनमें मुख्य नाम थे हैं-

१. हिंदी प्रचार सभा, हैद्राबाद स्थापना, १९३५ ई.

२. महाराष्ट्र, भाषा सभा, पुणे, १९४५ ई.

३. हिंदूस्थानी प्रचार सभा, वर्ध, १९४२ ई

४. साहित्य अनुशालीन समिति, मद्रास

५. हिंदी प्रचार सभा धारवाड ।

इस तरह आजादी मिलने से पहले भारत में अनौपचारिक तौर पर हिन्दी राष्ट्रभाषा का दर्ज प्राप्त कर चुकी थी । किंतु महात्मा गाँधी की मुत्यु के बाद हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए था वह प्राप्त नहीं हुआ । संविधान बन जाने के बाद में राष्ट्रभाषा जैसी कोई चीज नहीं रह गई । दलअसल, संविधान के आठवीं अनुसूचि में जिन २२ भाषाओं के नाम दिये गये हैं या साहित्य अकादमी आज जिन भाषाओं के साहित्य को पुरस्कृत करती है, वे सभी राष्ट्रभाषा कहलाती हैं । भारत ऐसा दैश है जहाँ ८८७ जनपदीय बोलियाँ हैं और जहाँ ५८ भाषाएँ स्कूलों में शेक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकत है । ये सभी राष्टभाषा का दर्ज मांगा सकती हैं ।

कुछ ऐसी बातें हैं जो हिन्दी को एक विशेष स्थान दिलाती है । पहले तो यह कि इस देश के साठ प्रतिशत भूभाग के लगभग चालीस प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं ।और देश में ज्यादा प्रयोग होने वाली भाषा हिंदी ही हैं । सभी भारतीय भाषाओं में सबसे प्रसिद्ध भाषा हिन्दी है और दूसरी बात यह है कि हिन्दी भारत की राजभाषा भी हैं । अग्रेंजी भी भारत की राजभाषा है, पर संविधान की स्पष्ट आकांक्षा है कि कालांतर में हिन्दी ही एकमात्रा राजभाषा के रूप में ग्रहण किया जाए ।

सह-राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ हिन्दी सध की राजभाषा होने पर भी भाग ५,१७,२२ और अनच्छेद ३४३-३५१ द्वारा हिन्दी को अंग्रेज़ी तथा अष्टम अनुसूची के अन्य भाषाओं से कुछ विशेष अधिकार संविधान के द्वारा प्राप्त हुए जिसके अंतर्गत विशेष रूप से हिन्देतर प्रांतों में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए स्कूल तथा कालेजें में हिन्दी अध्यापकों की नियुक्ति और हिन्दी पढंनेवाले धात्रें के लिए धात्रवृत्ती आदि सुविधाएँ दी जा रही हैं, इसके अतिरिक्त - विज्ञान, तकनीकि, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दवाली निर्माण के साथ - साथध हिन्दी में ग्रंथों का मुद्रण भी किया जा रहा है । लिपी संबंधी समस्याओं का निवारण करने केलिए कप्यूटर क्षेत्र में यूनिकोड सुविधा अपलब्ध की गयी है ।

भारत संसार का सबसे बडा लेकतंत्र देश है और हिंदी उसकी स्वाभाविक संपर्क भाषा और उसके केन्द्रीय शासन की राजभाषा है। इसलिए, हिंदी की साहित्यिक संपदा और भाषागत विशोषता के बार में लोगों की अलग-अलग जो राय है, अंतराष्ट्रीय जगत में हिंदी को महत्व मिलेगा ही ।

मारिशास, फीजी, ट्रेनिडाड, सूरीनाम, तयाईलैंट, बर्म, इंडोन्-ोशिया, भूटान, नेपाल, दक्षीण अफ्रिका इत्यादी ऐसे ही देश हैं जहाँ हिन्दी बोली और समझी जाती है ।

पाकिस्तान में तो यह व्यापक रूप से बोली और समझी जाती हैं , भले ही देवनागारी की जगह फारसी लिपि का प्रयोग होने के कारण उसे उर्दु कहकर बोला वा समझा जाता हैं। काफी हद तक यहीं स्थिति बंगलादेश की भी हैं।

इंग्लैंड, कनडा, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे अंग्रेज़ी देशों में भी भारत के मूल निवासी की बडी संख्या होने के कारण बहूत-से लोग हिंदी से सुपरिचित है ।

चीन, रूप, जापान, बल्गेरिया, टर्की, बेल्जीय्म्, प्रेंग्र, पोलांड ऐसे कई देशों में हिंदी विश्वविद्यालयों के स्तर पर हैं । कई देशों में आनलाइन पत्र पत्रिकाएं भी हिंदी में प्रकाशित हो रही है । हिंदी समय, भारत कोश, गद्य कोश जैसे वेब साइट्स् के माध्यम से अंग्रजी की तरह हिंदी में भी हर एक विषय पर पूर्ण जानकारी प्राप्त हो रही है ।

संयुक्त राष्ट्र संध में के लिए पहले अंग्रेजी, फेंच, रूसी और चीनी भाषाएँ स्वीक्तत थीं अब अरबी को भी एक कार्य-भाषा के रूप स्वीकार किया जा चुका । भारत के भतपूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपाई ने संयुक्ता राष्ट्र महासभा को दो बार हिंदी में संबोधित किया । पर अभी संयुक्त राष्ट्र महासभा की सपर्क भाषा के रूप में हिंदी को ग्रहण नहीं किया गया है । इसके कुछ राजनैतिक कारण हैं और कुछ तकनीकी ।

पर इसके बावजूद हिंदी का दर्ज अपने आप में कमजोर नहीं हो जाता हमें यह न भूलना चाहिए कि जन संख्या के आधार पर प्राप्त आंकडों के अनुसार, संसार में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषाओं में जहाँ चीनी भाषा-भाषी और अंग्रेजी भाषा-भाषी पहले और दूसरे स्थान पर हैं, हिंदी भाषियों को तीसरा दर्ज मिला है । हिंदी बोलने और समझनेवालों की संख्या को ही आधार माना जाए तो कामनवेल्थ के देशों में हिंदी को पहला स्थान मिलेगा । आशा है कि वर्तमान प्रधान मंत्री नरेद्र मोदी जिस तरह योगा को विश्व में ख्याति दिलवायी है, उसी तरह उन के प्रयासें से एक दिन हिंदी को भी संयुक्त राष्टमहासभा में उपरेक्त भाषाओं के साथ सपर्क भाषा के रूप में हिंदी को भी अवश्य स्थान मिलेगा । ■